आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा

1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-138 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अप्रैल 2026 | मूल्य - 5 रूपए

इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों को मिला मंच

अपनी आवाज, हुनर और सपनों से जीता सभी का दिल

बालकनामा रिपोर्टर: किशन, वीरा, ज्योति, काजल

हर वर्ष 12 अप्रैल को इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे मनाया जाता है। यह दिन उन लाखों बच्चों को समर्पित है, जो सड़कों पर, झुग्गी-बस्तियों में या बेहद कठिन परिस्थितियों में अपना बचपन बिताने को मजबूर हैं। ये बच्चे भी बड़े सपने देखते हैं, पढ़ना चाहते हैं, अपने परिवार की स्थिति बदलना चाहते हैं और सम्मान के साथ जीवन जीना चाहते हैं। लेकिन गरीबी, शिक्षा की कमी, असुरक्षा, बाल श्रम और समाज में भेदभाव जैसी अनेक चुनौतियाँ उनके रास्ते में बड़ी बाधा बन जाती हैं। इसके बावजूद ये बच्चे हर दिन संघर्ष करते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं। यह दिन समाज और सरकार दोनों को यह याद दिलाता है कि हर बच्चे को सुरक्षित, खुशहाल और सम्मानजनक बचपन का पूरा अधिकार है। इन्हीं बच्चों के सपनों, संघर्षों और प्रतिभाओं को मंच देने के उद्देश्य से 11 अप्रैल को चेतना संस्था द्वारा दिल्ली के ऐवान-ए-गालिब सभागार में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में दिल्ली, नोएडा, जयपुर और गुरुग्राम से आए 450 से अधिक सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम का माहौल ऊर्जा, उत्साह और बच्चों के आत्मविश्वास से भरा हुआ था। कार्यक्रम की शुरूआत राष्ट्रीय गान से हुई, जिसने पूरे सभागार में एकता और गर्व का माहौल बना दिया। बच्चों के चेहरों पर उत्साह साफ दिखाई दे रहा था, क्योंकि कई बच्चों के लिए यह पहली बार था जब उन्हें इतने बड़े मंच पर अपनी बात रखने और अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री एस. एम. अली, उप निदेशक (महिला एवं बाल विकास विभाग); श्री विनोद, सहायक निदेशक (महिला एवं बाल विकास विभाग); अनीता, संयुक्त आयुक्त (आयकर विभाग); श्री गिवोनी सोलेदाद, मुख्य तकनीकी सलाहकार - बाल श्रम (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन); कश्यपी एवं आयुषा, हल्दीराम स्किल अकादमी से; प्रीति एवं नेहा, एसबीटी से; एकता, इशिता एवं स्मिता, दिल्ली महिला आयोग से; लक्ष्मी दुबे, सहायक पुलिस आयुक्त (महिला एवं बाल विशेष पुलिस इकाई); श्री अनामित्रा, एम कार्बन से; श्री मन्नू, ग्रुप मैनेजर (एचसीएल); तथा सुगंधा, संवाददाता - द टाइम्स ऑफ इंडिया उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने नुक्कड़ नाटक 'आओ-आओ नाटक देखो' प्रस्तुत किया। इस नाटक के माध्यम से बच्चों ने सड़क पर जीवन बिताने वाले बच्चों की वास्तविक परिस्थितियों को बेहद प्रभावशाली तरीके से मंच पर रखा। नाटक में दिखाया गया कि कैसे बच्चे कठिन परिस्थितियों, आर्थिक परेशानियों और सामाजिक उपेक्षा के बावजूद अपने सपनों को जीवित रखते हैं और लगातार आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं। बच्चों की प्रस्तुति इतनी प्रभावशाली थी कि सभागार में मौजूद सभी लोग भावुक हो गए और तालियों की गूंज देर तक सुनाई देती रही। इसके बाद संगीत और जागरूकता गीतों के माध्यम से बच्चों ने बाल संरक्षण कानूनों, शिक्षा के अधिकार और बच्चों की सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी बात रखी। बच्चों ने गीतों और प्रस्तुतियों के जरिए यह संदेश दिया कि हर बच्चे को शिक्षा, सुरक्षा और सम्मान मिलना चाहिए। कार्यक्रम में मौजूद अन्य बच्चों और दर्शकों को भी इससे महत्वपूर्ण जानकारी मिली और वे बच्चों के अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक हुए। कार्यक्रम में आत्मरक्षा प्रदर्शन भी आयोजित किया गया, जिसमें बच्चों ने यह दिखाया कि वे कठिन परिस्थितियों में अपनी सुरक्षा कैसे कर सकते हैं। बच्चों ने पूरे आत्मविश्वास के साथ विभिन्न आत्मरक्षा तकनीकों का प्रदर्शन किया। इसके साथ ही बहुसांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम में रंग भर दिए। अलग-अलग राज्यों से आए बच्चों ने अपनी संस्कृति और प्रतिभा को मंच पर प्रस्तुत किया, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। पूरे कार्यक्रम के दौरान बच्चों के आत्मविश्वास, उत्साह और ऊर्जा ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। कार्यक्रम का एक बेहद भावुक पल तब आया, जब 12 वर्षीय नेहा (परिवर्तित नाम) ने मंच से अपनी भावनाएँ साझा कीं। उन्होंने कहा कि भले ही उनका बचपन सड़क किनारे बीता हो, लेकिन उनके सपने बहुत बड़े हैं। उन्होंने बताया कि कठिन परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने कभी हार नहीं मानी और उन्हें विश्वास है कि अगर उन्हें अवसर मिले, तो वे भी अपनी अलग पहचान बना सकती हैं और दुनिया को अपना हुनर दिखा सकती हैं। उनकी बातें सुनकर पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा और कई लोग भावुक हो गए। कार्यक्रम के दौरान आयोजित 'स्ट्रीट टॉक' सत्र में बच्चों ने खुलकर अपने जीवन के अनुभव साझा किए। बिहार से आई 15 वर्षीय दिशा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वह लंबे समय तक स्कूल नहीं जा पाई। घर की जिम्मेदारियों के कारण उसे अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करनी पड़ती थी। लेकिन चेतना संस्था से जुड़ने के बाद अब वह 10वीं कक्षा में पढ़ रही है और उसका सपना है कि वह आगे चलकर अध्यापिका बने तथा जरूरतमंद बच्चों को मुफ्त शिक्षा दे सके। नोएडा की कच्ची बस्ती में रहने वाली 12 वर्षीय सरिता (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जब वह छोटी थी, तभी उसके माता-पिता का निधन हो गया था। इसके बाद उसकी नानी ने उसे संभाला और वह कबाड़ बीनकर अपने परिवार की मदद करती रही। बाद में चेतना संस्था से जुड़ने के बाद उसके जीवन में बड़ा बदलाव आया। उसे मॉडलिंग में रुचि थी और इसी कार्यक्रम में उसे पहली बार मंच पर मॉडलिंग करने का अवसर मिला। यह पल उसके लिए बेहद खास और भावुक था। अब उसका स्कूल में दाखिला होने वाला है और वह अपने भविष्य को लेकर बेहद उत्साहित है। जयपुर से आए 14 वर्षीय भास्कर (परिवर्तित नाम) ने साझा किया कि आर्थिक तंगी के कारण उन्हें पढ़ाई छोड़कर चूड़ी बनाने का काम करना पड़ा। लंबे समय तक काम करने के कारण उन्हें कई शारीरिक परेशानियों का सामना भी करना पड़ा। लेकिन बाद में चेतना संस्था से जुड़ने के बाद उन्होंने दोबारा पढ़ाई शुरू की और अब वे अपने सपनों को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। भास्कर को चित्रकला में विशेष रुचि है और उनके बनाए गए चित्र स्कूल में भी लगाए गए हैं। उन्होंने अन्य बच्चों को संदेश दिया कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, अपने सपनों को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। पूरे कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने नाटक, नृत्य, गीत, कविता और अपनी बातों के माध्यम से यह दिखाया कि वे

शेष पृष्ठ 2 पर

बच्चों में बढ़ रहा 'गुच्ची' खेल का चलन, अभिभावक हुए परेशान

बातूनी रिपोर्टर- वीर रिपोर्टर- किशन

नोएडा के सेक्टर 78 की बस्तियों में इन दिनों बच्चों के बीच 'गुच्ची' नाम का पैसों से जुड़ा खेल बहुत तेजी से फैल रहा है। जब बालकनामा पत्रकार वहां गए, तो देखा कि इस खेल को सिर्फ छोटे बच्चे ही नहीं, बल्कि बड़े लड़के और युवा भी खेल रहे हैं। यह देखकर बस्ती में रह रहे बच्चों के माता-पिता भी काफी चिंतित हैं। यह खेल देखने में बहुत आसान लगता है, लेकिन इसका असर ठीक नहीं है। इसमें जमीन पर एक छोटा सा गोला बनाया जाता है और खिलाड़ी उसमें सिक्के डालते हैं। फिर अपनी बारी आने पर वे निशाना लगाकर सिक्कों को बाहर निकालने की कोशिश करते हैं। अगर कोई खिलाड़ी सही निशाना लगा देता है, तो वह पैसे जीत जाता है, लेकिन अगर निशाना चूक जाता है, तो उसे पैसे देने पड़ते हैं। धीरे-धीरे यह खेल जुए जैसा बनता जा रहा है। बस्ती में कई बच्चों को उनके माता-पिता खाने-पीने के लिए पैसे देते हैं, लेकिन बच्चे उन पैसों को इस खेल में लगा देते हैं। इससे उनका पैसा तो बर्बाद होता ही है, साथ ही वे गलत आदतों में भी पड़ रहे हैं। अभिभावक जमाली देवी (परिवर्तित नाम), जो 42 साल की हैं, उन्होंने अपनी परेशानी बताते हुए कहा, 'हम बच्चों को बार-बार समझाते हैं और उन्हें रोकने की कोशिश करते हैं, लेकिन वे हमारी बात नहीं सुनते। जब बड़े लड़के भी यह खेल खेलते हैं, तो छोटे बच्चे भी उन्हें देखकर सीख जाते हैं।' उन्होंने यह भी बताया कि इस खेल के दौरान बच्चे आपस में गाली-गलौज करने लगे हैं और उनके बीच झगड़े भी बढ़ रहे हैं। कुछ बच्चे पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे रहे और अपने स्वास्थ्य का भी ख्याल नहीं रख रहे हैं। अगर उन्हें कुछ कहा जाए, तो वे नाराज हो जाते हैं और बड़ों से गलत तरीके से बात करने लगते हैं। यह सब देखकर लगता है कि बच्चों के लिए सही दिशा और अच्छी गतिविधियों की कमी है। बड़ों को चाहिए कि वे बच्चों के सामने अच्छा उदाहरण रखें और उन्हें सही रास्ता दिखाएं। ऐसे पैसों वाले खेल बच्चों को गलत दिशा में ले जा सकते हैं, इसलिए इन्हें समय रहते रोकना बहुत जरूरी है। हम सभी को मिलकर यह कोशिश करनी चाहिए कि बच्चे पढ़ाई करें, अच्छे खेल खेलें और अच्छे संस्कार सीखें, ताकि उनका भविष्य अच्छा बन सके।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

स्कूल में हुई सामान्य सी बातचीत पर पिता की हिंसा, समझ की कमी ने बढ़ाई बालिका की परेशानी

बातूनी रिपोर्टर नव्या रिपोर्टर किशन

नोएडा सेक्टर 1 के पास स्थित बस्तियों से एक चिंताजनक घटना सामने आई है। यहां एक बालिका को स्कूल में हुई एक सामान्य घटना के बाद अपने ही पिता के गुस्से और हिंसा का सामना करना पड़ा। यह घटना दिखाती है कि कई बार घरों में बातचीत की कमी और गलत सोच बच्चों के लिए मुश्किल खड़ी कर देती है। 14 वर्षीय मनीषा (परिवर्तित नाम), जो कक्षा 6 में पढ़ती है, ने अपनी सहेली रुबीना (परिवर्तित नाम, उम्र 16 वर्ष) की कहानी बताई।रुबीना कक्षा 8 की छात्रा है और उसे अक्सर स्वास्थ्य से जुड़ी परेशानियां रहती हैं। एक दिन स्कूल में अचानक उसके पेट में तेज दर्द होने लगा। उस समय स्कूल में किसी शिक्षक के पास दवा नहीं थी, इसलिए उसने अपने एक सहपाठी लड़के से बाहर से दवा मंगवा ली।स्कूल की छुट्टी के बाद यह बात किसी पड़ोस के लड़के के जरिए रुबीना के पिता तक पहुंच गई। बिना पूरी बात समझे, उनके पिता गुस्से में आ गए। बताया गया कि उस समय वे नशे में भी थे। उन्होंने गुस्से में आकर बेटी की डंडे से पिटाई कर दी, जिससे उसके हाथ-पैर सूज गए। घर का माहौल और

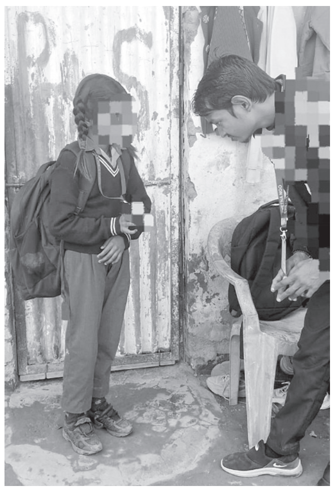

खराब तब हो गया जब छोटी बहन ने भी कुछ बातें मन से जोड़ दीं और स्कूल की पढ़ाई को लेकर अध्यापिका की शिकायत का जिक्र हुआ। इन सब बातों से पिता का गुस्सा और बढ़ गया। यह घटना कई बड़े सवाल खड़े करती है। क्या एक लड़की का स्कूल में किसी लड़के से मदद लेना गलत है? हमें लगता है कि यह एक सामान्य बात है। अगर कोई बच्चा परेशानी में है और मदद मांगता है, तो उसे गलत नजर से नहीं देखना चाहिए। बड़ों की चिंता अपनी जगह सही हो सकती है, लेकिन मारपीट कभी भी सही तरीका नहीं है। इससे बच्चों में डर बैठ जाता है, उनका आत्मविश्वास कम होता है और वे अपने माता-पिता से बात करना भी बंद कर देते हैं। अगर इस मामले में पिता ने गुस्से की जगह शांति से बात की होती, तो शायद बात इतनी आगे नहीं बढ़ती।

हमें लगता है कि माता-पिता को बच्चों की बात ध्यान से सुननी चाहिए और उन्हें समझने की कोशिश करनी चाहिए। यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि समय के साथ हमें अपनी सोच भी बदलनी होगी। बच्चों को सही-गलत समझाने के लिए प्यार और संवाद ज्यादा जरूरी है, न कि डर और हिंसा।

नोएडा की झुग्गी बस्तियों में असुरक्षित जीवन जीते परिवार

ब्यूरो रिपोर्ट

नोएडा के सेक्टर 76 के आसपास की झुग्गी बस्तियों से एक ऐसी सच्चाई सामने आई है, जिसे सुनकर मन दुखी हो जाता है। यहां करीब 400 से ज्यादा झुग्गियां बसी हुई हैं, जहां रहने वाले कई परिवार अनजाने में एक बड़ी समस्या में फँस गए हैं। उन्हें लगा था कि वे अपने लिए एक छोटा सा घर बना रहे हैं, लेकिन अब पता चल रहा है कि यह जमीन सरकारी है और उन्हें धोखे में रखकर बेची गई थी। इन्हीं बस्तियों में रहने वाले 14 साल के बालक समर (परिवर्तित नाम) ने अपनी बात साझा की और बताया, 'जब मेरे पिताजी ने यह जमीन खरीदी थी, तब उन्हें नहीं पता था कि यह सरकारी जमीन है। जिन लोगों ने जमीन बेची, उन्होंने कोई सही कागज भी नहीं दिए। हमें लगा था कि अब हमारा अपना घर हो जाएगा, लेकिन अब डर लगता है कि कहीं सब कुछ छिन न जाए। स्थानीय लोगों का कहना है कि कुछ दबंग और बिचौलिए इस सरकारी जमीन पर कब्जा कर लेते हैं और फिर उसे 1 से 2 लाख रुपये में बेच देते हैं। गरीब और अनजान लोग, जो बस अपने परिवार के लिए एक छत चाहते हैं, सस्ते प्लॉट के लालच में आकर उनकी बातों में फंस जाते हैं। वे अपनी पूरी जमा-पूंजी लगा देते हैं, लेकिन बदले में उन्हें सुरक्षा नहीं, बल्कि डर मिलता है।यह डर तब और बढ़ जाता है जब हर 3 से 6 महीने में पुलिस और प्रशासन की टीम वहां आती है और झुग्गियां हटाने की चेतावनी देती है। उस समय जिन लोगों ने जमीन बेची होती है, वे कहीं नजर नहीं आते। ऐसे में यहां रहने वाले लोग खुद को बिल्कुल अकेला और असहाय महसूस करते हैं। बस्ती में रहने वाले लोगों को पानी और बिजली जैसी जरूरी चीजों के लिए भी पैसे देने पड़ते हैं, लेकिन उनके पास कोई आधिकारिक कनेक्शन या अधिकार नहीं है। यानी वे हर दिन असुरक्षा में जी रहे हैं। अब धीरे-धीरे जब लोगों को सच्चाई पता चल रही है, तो कई परिवार यहां से जाने लगे हैं। कुछ लोग अपनी झुग्गियां किराए पर देकर कहीं और सही और सुरक्षित जगह पर जमीन लेने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन हर किसी के लिए यह आसान नहीं है। यह पूरी घटना हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि गरीब लोगों के सपनों के साथ ऐसा क्यों होता है? एक छोटा सा घर बनाने का सपना भी उनके लिए इतना मुश्किल क्यों बन जाता है? हमें लगता है कि इस मामले में प्रशासन को सख्ती से कदम उठाने चाहिए और ऐसे लोगों के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए जो गरीबों को धोखा दे रहे हैं। साथ ही, यहां रहने वाले परिवारों को सही जानकारी और सुरक्षा मिलनी चाहिए, ताकि आगे कोई और इस तरह ठगी का शिकार न हो। क्योंकि हर इंसान का सपना होता है एक सुरक्षित घर, जहां वह बिना डर के रह सके।

इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों को मिला मंच

पृष्ठ 1 का शेष

केवल संघर्ष की कहानी नहीं हैं, बल्कि हिम्मत, आत्मविश्वास और उम्मीद की मिसाल भी हैं। कई बच्चों के लिए यह मंच पहली बार अपनी आवाज उठाने और समाज के सामने अपनी पहचान बनाने का अवसर बना।

इस कार्यक्रम ने बच्चों के आत्मविश्वास को नई मजबूती दी और उन्हें यह एहसास कराया कि उनकी आवाज भी मायने रखती है। कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास विभाग, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन तथा पुलिस विभाग के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे। चेतना संस्था के निदेशक संजय गुप्ता ने बताया कि कार्यक्रम में शामिल अधिकांश बच्चे मजदूर, घरेलू कामगार, कूड़ा बीनने वाले, ड्राइवर और सड़क किनारे काम करने वाले परिवारों से आते हैं। उन्होंने कहा कि इन बच्चों में से कई अपने परिवार में पहली पीढ़ी के ऐसे बच्चे हैं, जो स्कूल जा रहे हैं और अपने भविष्य को बेहतर बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। चेतना संस्था द्वारा हर वर्ष आयोजित किया जाने वाला यह कार्यक्रम बच्चों को ऐसा मंच प्रदान करता है, जहाँ वे खुलकर अपनी बात रख सकें, अपने अनुभव साझा कर सकें और समाज के सामने अपनी पहचान बना सकें। सच में ऐसे कार्यक्रम बच्चों के आत्मविश्वास को मजबूत करते हैं, और साथ ही समाज को भी यह संदेश देते हैं कि हर बच्चे को समान अवसर, सम्मान और सुरक्षित भविष्य मिलना चाहिए। सड़क पर रहने वाला हर बच्चा केवल मदद का पात्र नहीं, बल्कि सपनों, प्रतिभाओं और संभावनाओं से भरा एक इंसान है, जिसे आगे बढ़ने के लिए सिर्फ एक अवसर और सहयोग की जरूरत है।

कूड़े में खाना ढूंढते मासूम

बातूनी रिपोर्टर पूजा व रिपोर्टर किशन

वर्तमान समय में सड़क और कामकाजी बच्चों की नाजुक स्थिति से जुड़ी एक घटना सामने आई है। नोएडा के चमचमाते मॉल और ऊँची-ऊँची इमारतों के पीछे एक ऐसी हकीकत छिपी है, जो किसी को भी झकझोर सकती है। नोएडा सेक्टर 15 के पास स्थित झुग्गी बस्तियों में रहने वाली 15 वर्ष की एक बालिका रूबी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हमारी बस्ती में कबाड़ा बीनने और छांटने का काम होता है। यहां कई ऐसे छोटे-छोटे बच्चे (लगभग 4 से 5 वर्ष के) हैं, जिनके माता-पिता दिनभर कबाड़ा बीनने के लिए बाहर चले जाते हैं। बालिका ने बताया कि जब माता-पिता कबाड़ा बीनकर लाते हैं, तो उसमें से खाने की चीजें जैसे फल, बासी रोटी या फास्ट फूड के बचे हुए टुकड़े मिल जाते हैं। बड़े घरों के लोग पार्टी या घर का बचा हुआ खाना डस्टबिन में फेंक देते हैं, जिसे ये बच्चे बिना किसी हिचक के खा लेते हैं। जब माता-पिता पूरे दिन के लिए बाहर रहते हैं, तो बच्चे घर पर ही रहते हैं और उन्हें यह समझ नहीं होती कि क्या खाना सही है और क्या गलत। उन्हें जो भी खाने लायक दिखता है, वे उसे खुशी-खुशी खा लेते हैं और पेट भरने के लिए कूड़े में फेंकी गई चीजों पर ही निर्भर रहते हैं। अधिकतर बच्चे फास्ट फूड, बिस्किट, चिप्स जैसी चीजें खाते हैं, चाहे वे खराब ही क्यों न हों। बस्ती के कई लोग यह सब देखते हैं, लेकिन कोई कुछ नहीं कहता और सभी अपने काम में लगे रहते हैं। इस तरह का खाना बच्चों के स्वास्थ्य के लिए बहुत खतरनाक है। इससे उन्हें संक्रमण, पेट की बीमारियां और कुपोषण जैसी गंभीर समस्याएं हो सकती हैं। बालिका ने यह भी बताया कि लगातार ऐसा खाना खाने से बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास पर भी बुरा असर पड़ रहा है। यह स्थिति केवल एक सामाजिक समस्या नहीं है, बल्कि हमारी संवेदनशीलता और व्यवस्था पर भी सवाल उठाती है। जरूरत है कि सरकार और समाज मिलकर इन बच्चों के लिए ठोस कदम उठाएं, ताकि उन्हें कूड़े में खाना ढूंढने के बजाय सम्मान के साथ जीने का अधिकार मिल सके।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

नोएडा में कामकाजी बच्चों ने उठाई आवाज, स्वास्थ्य जांच को बेहतर बनाने की मांग

बातूनी रिपोर्टर लक्ष्मण व रिपोर्टर किशन

नोएडा सेक्टर-126 से एक महत्वपूर्ण मुद्दा सामने आया है। 13 वर्षीय कबीर (परिवर्तित नाम) ने अपनी मन की बात साझा करते हुए बताया कि हम चेतना संस्था द्वारा चलाए जा रहे नन्हे परिंदे वैन पर पढ़ने जाते हैं। वैन में पढ़ने वाले बच्चों ने अपनी स्वास्थ्य जांच (हेल्थ चेकअप) की व्यवस्था को लेकर चिंता जताई है। बच्चों का कहना है कि हमें 3 महीने में एक बार जो हेल्थ चेकअप कराया जाता है, वह पर्याप्त और प्रभावी नहीं है। जब भी हम चेकअप के लिए डॉक्टर के पास जाते हैं, तो डॉक्टर हमसे केवल बुखार, जुकाम या खांसी जैसे लक्षण पूछते हैं और उसी आधार पर दवा दे देते हैं। बच्चों का कहना है कि इस तरह की सामान्य जांच से केवल ऊपर-ऊपर की बीमारी का ही इलाज हो पाता है, जबकि शरीर के अंदर चल रही संभावित बीमारियों का पता नहीं चल पाता। बातचीत के दौरान एक अन्य बच्चे ने बताया कि छोटी-मोटी बीमारी की दवा तो हम खुद भी ले सकते हैं, लेकिन यह जानना बहुत जरूरी है कि हमारे शरीर के अंदर कोई गंभीर बीमारी तो नहीं है। इसके लिए मशीनों द्वारा जांच होना बहुत जरूरी है। बच्चों की मांग है कि जब भी वे अस्पताल में हेल्थ चेकअप के लिए जाएं, तो जांच को और बेहतर बनाया जाए। उनका

कहना है कि डॉक्टरों को केवल लक्षण पूछने के बजाय आधुनिक मशीनों और उपकरणों के माध्यम से पूरी जांच करनी चाहिए, ताकि किसी भी बीमारी का समय रहते पता चल सके। बच्चों का यह भी कहना है कि कई बार गंभीर बीमारियां शुरूआती चरण में पकड़ में नहीं आतीं और जब तक उनका पता चलता है, तब तक स्थिति काफी गंभीर हो जाती है। इसलिए समय-समय पर सही और विस्तृत जांच होना बहुत जरूरी है। अंत में बच्चों ने अधिकारियों से अपील की है कि वे इस मुद्दे पर ध्यान दें और अस्पतालों में बेहतर स्वास्थ्य जांच सुविधाएं उपलब्ध कराएं, ताकि बच्चों का स्वास्थ्य सुरक्षित और बेहतर बना रहे।

बस्ती के सामने कूड़े का ढेर, बच्चों की सेहत पर मंडराता खतरा

बातूनी रिपोर्टर प्रीति व रिपोर्टर किशन

नोएडा सेक्टर 62 में फैक्ट्रियों के बीच सरकारी जमीन के नालों के किनारे बनी झुग्गी बस्तियों में रहने वाले बच्चों ने अपनी बस्ती की एक बड़ी समस्या को सामने रखा है।

12 वर्षीय बालिका सोना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि इन दिनों हमारी बस्ती के सामने कूड़े का बहुत बड़ा ढेर लग गया है, जिससे स्थिति बहुत खराब हो गई है। पहले यह कूड़ा यहां नहीं फेंका जाता था, बल्कि मेला मैदान में डाला जाता था। लेकिन अब कुछ एमसीडी (दिल्ली नगर निगम) के लोग लगातार हमारी बस्ती के सामने ही कूड़ा डाल रहे हैं। बच्चों का कहना है कि पहले हमारी बस्ती का वातावरण काफी साफ रहता था और हम खुश रहते थे, लेकिन अब हर तरफ गंदगी, सड़ांध और बदबू फैल गई है। हम बच्चे इसी कूड़े के पास खेलने को मजबूर हैं। कई बार हमारी चीजें कूड़े में गिर जाती हैं और उन्हें उठाने के दौरान कील, कांच या अन्य नुकीली चीजें हमें चुभ जाती हैं। कई बार हम अनजाने में गंदी चीजों को छू लेते हैं और वही हाथ मुंह में डाल लेते

हैं, जिससे हम बार-बार बीमार पड़ रहे हैं। बस्ती के अन्य बच्चों ने बताया कि यहां बच्चों में बुखार, खांसी, त्वचा संक्रमण और पेट की बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। साथ ही मक्खियों और मच्छरों की संख्या भी बहुत बढ़ गई है, जिससे बीमारियों का खतरा और ज्यादा हो गया है। बच्चों का यह भी कहना है कि एमसीडी के अधिकारियों से कई बार शिकायत करने के बावजूद अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है, जिससे लोगों में नाराजगी बढ़ती जा रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि खुले में कूड़ा फेंकना पर्यावरण और स्वास्थ्य दोनों के लिए बहुत हानिकारक है, खासकर बच्चों के लिए, जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है। स्थानीय लोगों की मांग है कि यहां कूड़ा फेंकने पर तुरंत रोक लगाई जाए और नियमित सफाई की व्यवस्था की जाए। यह समस्या एक बार फिर दिखाती है कि शहरी विकास के साथ-साथ बुनियादी सुविधाओं और स्वच्छता पर ध्यान देना कितना जरूरी है। अगर समय रहते इस पर ध्यान नहीं दिया गया, तो यह समस्या आगे और भी गंभीर हो सकती है।

मुश्किलों के बीच भी नहीं रुके कदम, सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने 10वीं में पाई सफलता

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी
बातूनी रिपोर्टरः विराट

परीक्षा और उसके परिणाम बच्चों के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि यही उनके भविष्य की दिशा तय करते हैं। वर्ष 2026 में चेतना संस्था के वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों पर नामांकित कुल 5 बच्चों ने कक्षा 10वीं की परीक्षा दी। इस क्रम में जयपुर की खोर बस्ती के बच्चों ने कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए अच्छी सफलता हासिल की है।

इस वर्ष कुल 3 बच्चों ने प्रथम और द्वितीय श्रेणी से 10वीं कक्षा पास कर न केवल अपने परिवार बल्कि पूरी बस्ती और अभिभावकों का नाम गर्व से ऊँचा किया है। इनमें से 16 वर्षीय विराट (परिवर्तित नाम) खास तौर पर प्रेरणादायक रहे, जिन्होंने द्वितीय श्रेणी से परीक्षा पास की। उनका दाखिला वर्ष 2023 में चेतना संस्था द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में करवाया

गया था।

पढ़ाई में रुचि होने के बावजूद उनके सामने कई मुश्किलें थीं। उनकी माताजी अक्सर बीमार रहती हैं और बड़ा भाई गांव में होने के कारण घर की जिम्मेदारी उन पर आ गई। वे अपने पिता और दो भाइयों के साथ रहते हुए घर के सभी काम जैसे खाना बनाना, सफाई करना और छोटे भाई की देखभाल करते हुए नियमित रूप से स्कूल भी जाते रहे।

आर्थिक मदद के लिए उन्होंने ढोल बजाना, शादियों में लाइट और कैटरिंग का काम करना और झूले लगाने जैसे काम भी किए। इन सब जिम्मेदारियों के बावजूद उन्होंने पढ़ाई नहीं छोड़ी। परीक्षा के समय भी वे काम पर जाते थे और साथ में किताबें लेकर रात तक पढ़ाई करते थे।

इसके अलावा 15 वर्षीय रामपाल (परिवर्तित नाम) ने प्रथम श्रेणी से 10वीं कक्षा पास की साथ ही जयपुर के मांग्यावास समुदाय की 15 वर्षीय बालिका मेघा (परिवर्तित नाम) ने द्वितीय श्रेणी से 10वीं कक्षा उत्तीर्ण की।

इन बच्चों ने कठिन परिस्थितियों में भी मेहनत और लगन से अच्छा परिणाम हासिल किया। इनकी सफलता यह दिखाती है कि अगर मन में दृढ़ संकल्प और मेहनत करने का जज्बा हो, तो कोई भी मुश्किल रास्ता रोक नहीं सकता। इन सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने साबित कर दिया कि कम संसाधनों में भी बड़े सपने पूरे किए जा सकते हैं।

छोटी उम्र में बड़ी जिम्मेदारी निभा रही टीना

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः टीना

जयपुर की मांग्यावास बस्ती में बालकनामा रिपोर्टर दीपक के दौरे के दौरान एक प्रेरणादायक किस्सा सामने आया। यहां उनकी मुलाकात 13 वर्षीय बालिका टीना (परिवर्तित नाम) से हुई, जो कम उम्र में ही अपने परिवार की जिम्मेदारी संभालते हुए आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ रही है। टीना सीमित संसाधनों के बावजूद घर पर सिलाई का काम करती है और साथ ही वैकल्पिक शिक्षा केंद्र मांग्यावास में पढ़ाई भी करती है। घर की परिस्थितियां आसान नहीं हैं। उनकी माता जी घरों में झाड़ू-पोछा करती हैं और पिता ढोलक बजाकर परिवार का खर्च चलाते हैं।

ऐसे में टीना भी अपने हुनर से परिवार का सहयोग कर रही है। वह न केवल पढ़ाई में रुचि रखती है, बल्कि सिलाई के छोटे-छोटे काम करके कुछ पैसे भी कमाती है। अपनी कमाई को वह समझदारी से बचाती है और अपनी जरूरतों के साथ-साथ अपने छोटे भाई-बहनों के लिए कॉपी-किताब जैसी जरूरी चीजें भी खरीदती है। टीना का सपना है कि वह पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर बने और अपने परिवार को बेहतर जीवन दे सके। उसकी मेहनत, जिम्मेदारी और आगे बढ़ने का जज्बा बस्ती के अन्य बच्चों के लिए भी प्रेरणा बन रहा है। अच्छी बात यह है कि टीना का आधार कार्ड बन चुका है और आने वाले शैक्षिक सत्र जुलाई 2026 में उसे स्कूल में दाखिला भी मिल जायेगा। वास्तव में अगर इरादे मजबूत हों, तो छोटी उम्र भी बड़े सपनों और जिम्मेदारियों को पूरा करने में बाधा नहीं बनती।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

इंडियन स्ट्रीट स्पोर्ट्स कार्निवल में बच्चों का शानदार प्रदर्शन, कबड्डी-खो-खो में दिखाया जोश

बालकनामा रिपोर्टर : दामिनी
बातूनी रिपोर्टर : आमना

खेल बच्चों के जीवन का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। खेलों से न केवल शरीर स्वस्थ रहता है, बल्कि बच्चों में आत्मविश्वास, अनुशासन और टीमवर्क भी विकसित होता है। इसी उद्देश्य से बच्चों को आगे बढ़ाने और उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए समय-समय पर खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। 28 मार्च को सामाजिक संस्था चेतना द्वारा इंडियन स्ट्रीट स्पोर्ट्स कार्निवल के अंतर्गत चौगान स्टेडियम में कबड्डी और खो-खो प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत राष्ट्रीय गान के साथ हुई, जिससे पूरा माहौल बहुत अच्छा और गरिमामय हो गया। इस आयोजन में पुण्यार्थम, मानव सेवा ट्रस्ट, टाबर और इंपैक्ट बियॉन्ड बॉर्डर फाउंडेशन जैसी कई संस्थाओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में कुल 15 टीमों ने हिस्सा लिया, जिनमें अलग-अलग आयु वर्ग के बच्चों ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया। कबड्डी (सीनियर और जूनियर) और खो-खो (सीनियर और जूनियर) की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। मैदान में ढोल की थाप और जोशीले नारों के साथ बच्चों ने खेला, जिससे पूरा स्टेडियम जोश और ऊर्जा से भर गया। करीब 300 से अधिक बच्चों की भागीदारी ने इस आयोजन को खास बना दिया। बच्चों ने खेल के दौरान अनुशासन, टीमवर्क, आत्मविश्वास और खेल भावना का अच्छा प्रदर्शन किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान पुलिस के डीएसपी और प्रो कबड्डी खिलाड़ी राजू लाल चौधरी उपस्थित रहे। उन्होंने बच्चों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि खेल से शारीरिक विकास के साथ-साथ अनुशासन और

टीम भावना भी विकसित होती है। कार्यक्रम में पैरालिंपिक स्वर्ण पदक विजेता देवेंद्र झाझरिया भी शामिल हुए। उन्होंने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि सही दिशा और अवसर मिलने पर बच्चे जरूर देश का नाम रोशन कर सकते हैं। इसके अलावा व्यापार मंडल के अध्यक्ष, चाइल्ड प्रोटेक्शन अधिकारी और अन्य अतिथियों ने भी बच्चों का हौसला बढ़ाया। प्रतियोगिता के परिणाम में सीनियर कबड्डी में खोर के शेर और जूनियर में दमदार धुरंधर टीम विजेता रही। वहीं सीनियर खो-खो में स्ट्रीट स्टार और जूनियर में हसनपुरा किंग्स टीम विजेता बनी। जब बच्चों से उनके अनुभव पूछे गए, तो उन्होंने बताया कि यह प्रतियोगिता उनके लिए बहुत मजेदार और सीखने वाली रही। 12 वर्षीय बालक रितीक (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'खो-खो खेलते समय हमें बहुत तेजी से सोचना और तुरंत निर्णय लेना पड़ता है, इससे हमारी फुर्ती बढ़ती है।' 14 वर्षीय बालिका आमना (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'पहले मुझे खेल से डर लगता था, लेकिन इस प्रतियोगिता में भाग लेने से मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया है।' कबड्डी खेलने वाले बच्चों ने इसे ताकत और रणनीति का खेल बताया। 13 वर्षीय बालक आर्यन (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'जब मैं 'कबड्डी-कबड्डी' बोलते हुए विरोधी टीम में जाता हूँ, तो बहुत उत्साह और चुनौती महसूस होती है।' 11 वर्षीय बालिका सिमरन (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'कबड्डी ने मुझे सिखाया कि जीत के लिए टीमवर्क और एक-दूसरे पर भरोसा बहुत जरूरी होता है।' अंततः यह पूरा कार्यक्रम बच्चों के लिए केवल खेल नहीं, बल्कि सीखने, आत्मविश्वास बढ़ाने और खुद को निखारने का एक अच्छा अवसर साबित हुई।

लापरवाही से बढ़ी समस्या, नाली का पानी बना बच्चों के लिए खतरा

रिपोर्टर - प्रीति

बालकनामा रिपोर्टर प्रीति ने दिल्ली के ठ-86 समुदाय का दौरा किया, जहां एक गंभीर समस्या सामने आई। 14 वर्षीय प्रिया (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उनके इलाके में बनी नाली का पानी सही तरीके से निकल नहीं पाता है। अक्सर नाली का गंदा पानी रेलवे लाइन की पटरी पर फैल जाता है, जिससे वहां से गुजरने वाले लोगों को फिसलने का खतरा बना रहता है। प्रिया ने यह भी बताया कि आसपास के घरों से निकलने वाला पानी जैसे नहाने, कपड़े धोने और बर्तन साफ करने का पानी सीधे इसी नाली में जाता है। लेकिन नाली की नियमित सफाई नहीं होती और उसमें कचरा व पत्थर डाल दिए जाते हैं, जिससे पानी का बहाव रुक जाता है। इसके कारण पानी नाली में जमा होकर बाहर पटरी पर फैलने लगता है। इसी समुदाय में रहने वाली 15 वर्षीय गौरी (परिवर्तित नाम) ने भी इस समस्या की पुष्टि की। उन्होंने बताया कि कई घर नाली के ऊपर या बहुत पास बने हुए हैं, जिससे लोगों को काफी परेशानी होती है। कुछ लोग लापरवाही में नाली में कचरा और पत्थर डाल देते हैं, जिससे पानी आगे नहीं बढ़ पाता। इस कारण न केवल रेलवे पटरी पर पानी जमा होता है, बल्कि कई बार यह पानी गली में भी फैल जाता है। गौरी ने बताया कि एक दिन नाली की सफाई करने वाले कर्मचारियों ने लोगों से अपील भी की थी कि वे नाली में कचरा और पत्थर न डालें, क्योंकि इससे समस्या और बढ़ जाती है। लेकिन इसके बावजूद अभी तक कोई खास सुधार देखने को नहीं मिला है। इस समस्या का असर सबसे ज्यादा बच्चों और बुजुर्गों पर पड़ रहा है, जिन्हें गली में आने-जाने में दिक्कत होती है। रेलवे पटरी पर फिसलन के कारण हादसे का खतरा बना रहता है और गंदे पानी के कारण बीमारियों का डर भी बना रहता है।

अब माता-पिता भी साथ, बदलती सोच से बच्चों में बढ़ा पढ़ाई का उत्साह

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: रिहाना

जयपुर के खार की ढाणी सरकारी विद्यालय में इस वर्ष वार्षिक परीक्षा परिणाम और प्रवेशोत्सव कार्यक्रम बहुत उत्साह और खुशी के साथ मनाया गया।

इस कार्यक्रम की खास बात यह रही कि इसमें अभिभावकों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। उन्होंने बच्चों के साथ मिलकर रंगोली और चित्रकारी जैसी रचनात्मक गतिविधियों में हिस्सा लिया। यह पहल बहुत खुशी देने वाली रही साथ ही इससे यह भी पता चलता है कि अब लोगों की शिक्षा के प्रति सोच बदल रही है।

कुछ समय पहले तक स्थिति बिल्कुल अलग थी। जयसिंहपुरा खोर बस्ती के अभिभावक अपने बच्चों को स्कूल भेजने में हिचकिचाते थे, क्योंकि बच्चों को लगभग 4 किलोमीटर दूर खेतों और जंगल के रास्ते से पैदल चलकर स्कूल जाना पड़ता था। उन्हें डर रहता था कि छोटे बच्चे इतनी लंबी दूरी रोज तय नहीं कर पाएंगे। लेकिन अब समय के साथ सोच में अच्छा बदलाव आया है।

चेतना संस्था के कार्यकर्ताओं के प्रयास और जागरूकता के कारण अब अभिभावक न केवल बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेज रहे हैं, बल्कि उनकी पढ़ाई में भी सहयोग कर रहे हैं। इस बदलाव का अच्छा परिणाम भी देखने को मिला है। विद्यालय के सभी नामांकित बच्चे अच्छे अंकों से पास होकर अगली कक्षा में प्रमोट हुए हैं। अब अभिभावक शिक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भाग ले रहे हैं, जिससे बच्चों का आत्मविश्वास और रचनात्मकता दोनों बढ़ रहे हैं।

11 वर्षीय बालिका रिहाना (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'जब हमारे माता-पिता हमें पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं और हमारे साथ स्कूल आते हैं, तो हमें बहुत अच्छा लगता है और हमें नया सीखने का मन करता है।' खार की ढाणी का यह विद्यालय इस बात का अच्छा उदाहरण बन गया है कि अगर समुदाय और स्कूल मिलकर काम करें, तो हर कठिनाई को दूर किया जा सकता है और शिक्षा की रोशनी हर घर तक पहुंचाई जा सकती है।

मेहनत और लगन से कोमल ने हासिल किया पहला स्थान, बनी मिसाल

बालकनामा रिपोर्टर अमृत

वाल्मीकि कैंप में रहने वाली 13 वर्षीय कोमल (परिवर्तित नाम) ने अपनी कड़ी मेहनत, लगन और अनुशासन के बल पर एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। हाल ही में घोषित फाइनल परीक्षा परिणामों में कोमल ने अपनी कक्षा में पहला स्थान प्राप्त कर न केवल अपने विद्यालय, बल्कि अपने परिवार और पूरे क्षेत्र का नाम रोशन किया है। सीमित संसाधनों के बावजूद उसकी यह सफलता सभी के लिए प्रेरणादायक बन गई है। कोमल ने पूरे शैक्षणिक वर्ष के दौरान नियमित रूप से पढ़ाई

की और हर विषय में अच्छा प्रदर्शन किया। वह समय का सही उपयोग करती थी और पढ़ाई के साथ-साथ रोजाना पुनरावृत्ति पर भी ध्यान देती थी। कठिन विषयों को समझने के लिए वह शिक्षकों से बार-बार प्रश्न पूछती थी और तब तक प्रयास करती थी जब तक उसे पूरी तरह समझ न आ जाए। शिक्षकों के अनुसार कोमल शुरू से ही पढ़ाई के प्रति गंभीर और अनुशासित छात्रा रही है, जो कक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेती थी और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भी आगे रहती थी। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने उसकी उपलब्धि को गर्व का क्षण बताते हुए कहा कि उसकी मेहनत अन्य छात्रों के लिए प्रेरणा है। वहीं कोमल ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता और शिक्षकों को देते हुए कहा कि निरंतर अभ्यास और मार्गदर्शन से ही यह संभव हो पाया और वह आगे भी इसी तरह मेहनत कर अपने परिवार और स्कूल का नाम रोशन करना चाहती है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

घर के झगड़ों के बीच अकेला पड़ता बचपन

बालकनामा रिपोर्टरः अमृत

दिल्ली में अपने इलाके की एक बस्ती के दौरे के दौरान बालकनामा रिपोर्टर अमृत ने एक चिंताजनक स्थिति को सामने पाया, जहां कई बच्चे स्कूल जाने के बजाय छोटे-मोटे कामों में लगे हुए थे। इन बच्चों के हाथों में किताबों और कॉपियों की जगह काम के औजार नजर आए, जो उनके भविष्य को लेकर गंभीर सवाल खड़े करते हैं। जहां एक ओर बच्चों को स्कूल में पढ़ाई करनी चाहिए, वहीं दूसरी ओर वे मजबूरी या लापरवाही के कारण काम करने को विवश हैं। स्थानीय लोगों से बातचीत में पता चला कि अधिकांश अभिभावक रोजी-रोटी के लिए सुबह जल्दी काम पर निकल जाते हैं और देर शाम तक लौटते हैं, जिसके कारण बच्चों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा पाता। कोई यह सुनिश्चित नहीं करता कि बच्चे नियमित रूप से स्कूल जा रहे हैं या नहीं, और उनकी पढ़ाई पर भी निगरानी नहीं रखी जाती। परिणामस्वरूप, बच्चे धीरे-धीरे शिक्षा से दूर होते जाते हैं और काम में लग जाते हैं। रिपोर्टर अमृत ने जब 12 वर्षीय अंकुश (परिवर्तित नाम) से बात की, तो उसने बताया कि वह पहले नियमित रूप से स्कूल जाता था, लेकिन अब उसने जाना छोड़ दिया है। उसने कहा, 'पहले मैं स्कूल जाता था, लेकिन अब मैंने जाना छोड़ दिया है।

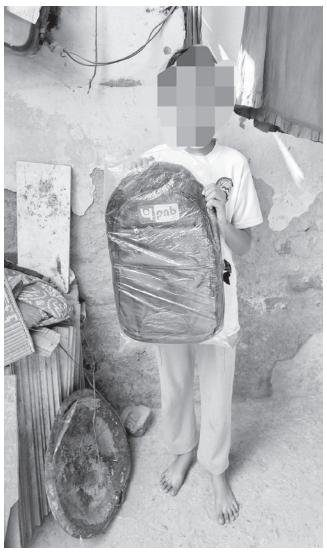

घर पर कोई पूछता नहीं, इसलिए मैं दुकान पर काम करने लग गया हूं।' उसकी बात यह दर्शाती है कि बच्चों के जीवन में मार्गदर्शन और निगरानी कितनी महत्वपूर्ण होती है।अंकुश की तरह ही बस्ती में कई अन्य बच्चे भी हैं, जो पढ़ाई छोड़कर छोटे-मोटे कामों में लग गए हैं। कुछ बच्चे दुकानों पर काम करते हैं, तो कुछ मजदूरी जैसे कार्यों में शामिल हैं। इससे उन्हें थोड़े पैसे तो मिल जाते हैं, लेकिन उनकी शिक्षा बाधित हो जाती है और उनका भविष्य अंधकारमय होने लगता है। विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों के जीवन में अभिभावकों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। यदि माता-पिता बच्चों की पढ़ाई, दिनचर्या और भविष्य पर ध्यान नहीं देंगे, तो बच्चे आसानी से गलत दिशा में जा सकते हैं। समाज के जागरूक लोगों ने भी चिंता जताई है कि यदि समय रहते इस समस्या पर ध्यान नहीं दिया गया, तो यह एक गंभीर सामाजिक चुनौती बन सकती है, जिसमें कई बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाएंगे। इसलिए आवश्यक है कि अभिभावक अपनी जिम्मेदारी को समझें और बच्चों की शिक्षा को प्राथमिकता दें। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि बच्चे नियमित रूप से स्कूल जाएं, पढ़ाई करें और अपने सपनों को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ें। तभी बच्चों का भविष्य सुरक्षित, उज्ज्वल और बेहतर बन सकता है।

बच्चों में ऑनलाइन गेमिंग की लत बढ़ी, पढ़ाई और सेहत पर पड़ रहा गंभीर असर

बालकनामा रिपोर्टर - आसिफ

दिल्ली के कमला नेहरू कैंप की झुग्गी बस्ती में इन दिनों बच्चों के बीच ऑनलाइन गेम खेलने की आदत तेजी से बढ़ती जा रही है। कई बच्चे घंटों मोबाइल फोन पर गेम खेलते रहते हैं, जिससे उनकी पढ़ाई और रोजमर्रा की दिनचर्या पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। पहले जहां बच्चे स्कूल के बाद खेलकूद और पढ़ाई में समय बिताते थे, वहीं अब अधिकतर समय मोबाइल गेम्स में ही चला जाता है। यह समस्या लगातार बढ़ रही है, जिससे स्थानीय लोग भी चिंतित हैं। स्थानीय निवासियों के अनुसार, कई बच्चे स्कूल से लौटते ही मोबाइल लेकर गेम खेलने लगते हैं और लंबे समय तक उसी में व्यस्त रहते हैं। इसका असर उनकी पढ़ाई, नींद, आंखों की सेहत और मानसिक स्थिति पर साफ दिखाई दे रहा है। कई बच्चे समय पर होमवर्क पूरा नहीं कर पाते और पढ़ाई में उनकी रुचि भी कम होती जा रही है। बालकनामा रिपोर्टर आसिफ से

बातचीत के दौरान 13 वर्षीय रोहित (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'मैं स्कूल से आने के बाद रोज गेम खेलता हूँ। कई बार इतना खेल लेता हूँ कि पढ़ाई का मन ही नहीं करता।' वहीं 15 वर्षीय आकाश (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'गेम खेलना अच्छा लगता है, लेकिन अब घरवाले डांटते हैं क्योंकि मेरी पढ़ाई प्रभावित हो रही है।' कुछ अभिभावकों का कहना है कि मोबाइल बच्चों के हाथ में आने के बाद वे ज्यादा समय उसी पर बिताने लगे हैं और बाहर जाकर खेलना लगभग बंद हो गया है। इससे बच्चों का शारीरिक विकास भी प्रभावित हो रहा है और वे धीरे-धीरे एकांत में रहने के आदी होते जा रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, लंबे समय तक मोबाइल स्क्रीन देखने से बच्चों की आंखों पर दबाव पड़ता है, नींद की समस्या हो सकती है और मानसिक तनाव भी बढ़ सकता है। इसलिए जरूरी है कि बच्चों के मोबाइल उपयोग पर समय सीमा तय की जाए और उन्हें खेलकूद, पढ़ाई तथा रचनात्मक गतिविधियों की ओर प्रेरित किया जाए। कमला नेहरू कैंप के लोग चाहते हैं कि बच्चों को सही दिशा मिले और वे मोबाइल की लत से दूर रहकर अपने भविष्य पर ध्यान केंद्रित कर सकें। यदि समय रहते इस समस्या पर ध्यान दिया जाए, तो बच्चे अपनी पढ़ाई और जीवन में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं।

संघर्ष के बीच सफलता की मिसाल बने अंजू और अरमान

बालकनामा रिपोर्टरः प्रीति

दिल्ली के N-86 समुदाय में दौरे के दौरान बालकनामा रिपोर्टर की मुलाकात दो बच्चों, अंजू और अरमान से हुई, जिन्होंने अपने संघर्ष, जिम्मेदारी और मेहनत की प्रेरणादायक कहानी साझा की। 11 वर्षीय अंजू (परिवर्तित नाम), जो छठी कक्षा में पढ़ती है, ने बताया कि उसकी माँ का बाइक दुर्घटना में एक्सीडेंट हो गया था, जिससे उनके हाथों में गंभीर चोटें आईं और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। माँ के अस्पताल में होने के कारण घर की पूरी जिम्मेदारी अचानक अंजू के कंधों पर आ गई। कम उम्र में ही उसे खाना बनाना, सफाई करना और अन्य घरेलू काम संभालने पड़े। इसके साथ ही वह रोज अस्पताल जाकर अपनी माँ की देखभाल भी करती थी। इसी दौरान उसकी परीक्षाएं भी चल रही थीं। घर और पढ़ाई के दोहरे दबाव के बावजूद अंजू ने हार नहीं मानी और दोनों जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। उसकी मेहनत का परिणाम यह रहा कि उसने अपनी परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त किए। वहीं 14 वर्षीय अरमान (परिवर्तित नाम) की कहानी भी उतनी ही प्रेरणादायक है। वह अपने परिवार से दूर रहकर दिल्ली में पढ़ाई कर रहा है और पढ़ाई के साथ-साथ घर के काम भी संभालता है। वह चेतना संस्था से जुड़ा हुआ है, जिसके सहयोग से उसका विद्यालय में दाखिला हुआ। वर्तमान में वह आठवीं कक्षा में अध्ययनरत है। अरमान ने बताया कि परीक्षा के दौरान उसने कड़ी मेहनत, अनुशासन और समय के सही उपयोग के साथ पढ़ाई की। उसकी मेहनत रंग लाई और वह अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुआ। जब उसने अपने परिणाम की जानकारी अपनी माँ और अध्यापिका को दी, तो दोनों बेहद खुश हुईं। अरमान ने यह भी साझा किया कि उसे पहले खुद पर इतना भरोसा नहीं था, लेकिन परिणाम देखकर उसका आत्मविश्वास काफी बढ़ गया। इन दोनों बच्चों की कहानियां यह साबित करती हैं कि कठिन परिस्थितियों के बावजूद अगर हिम्मत, मेहनत और दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ा जाए, तो सफलता जरूर मिलती है।

सड़क किनारे काम करते बालक के साथ बड़ा हादसा, बाल-बाल बची जान

बालकनामा रिपोर्टरः आसिफ

राजधानी दिल्ली के कमला नेहरू कैंप की झुग्गी बस्ती में रहने वाले 13 वर्षीय सूरज (परिवर्तित नाम) के साथ एक गंभीर हादसा हो गया, जिसमें वह बाल-बाल बच गया। यह घटना उस समय हुई जब वह मलबे के पास तार चुनने गया था।प्राप्त जानकारी के अनुसार, सूरज जैसे कई बच्चे मजबूरी में ऐसे खतरनाक काम करने को विवश हैं। घटना के दौरान एक मलबा ढोने वाला ट्रक वहाँ पहुँचा, जिस पर सूरज चढ़ गया। इसी बीच अचानक उसका पैर फिसल गया और वह नीचे गिर पड़ा, जिससे वह ट्रक के पहिए के नीचे आ गया।मौके पर मौजूद एक व्यक्ति ने तुरंत साहस दिखाते हुए सूरज को खींचकर बाहर निकाला, जिससे एक बड़ी दुर्घटना टल गई। हालांकि, ट्रक

का एक पहिया उसके पैर पर चढ़ गया, जिससे उसका पैर टूट गया। हादसे के समय सूरज बेहोश हो गया था।घटना की सूचना मिलते ही उसका बड़ा भाई मौके पर पहुँचा और उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहाँ उसका इलाज जारी है। फिलहाल सूरज को चलने-फिरने और दैनिक कार्य करने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।बालकनामा रिपोर्टर आसिफ (परिवर्तित नाम) से बातचीत में एक स्थानीय व्यक्ति ने बताया, 'अगर समय पर मदद नहीं मिलती, तो हादसा और भी गंभीर हो सकता था। बच्चा बहुत दर्द में था।यह घटना एक बार फिर उजागर करती है कि मलबे के पास काम करना बच्चों के लिए कितना खतरनाक है। स्थानीय लोगों का कहना है कि आर्थिक तंगी के कारण बच्चे ऐसे जोखिम भरे काम करने को मजबूर हैं। उन्होंने प्रशासन से मांग की है कि बच्चों के लिए सुरक्षित वातावरण और बेहतर शिक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ताकि वे ऐसे खतरनाक कार्यों से दूर रहकर अपने भविष्य को सुरक्षित बना सकें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

इंटरनेट के बढ़ते दुरुपयोग से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित, बढ़ रही चिंता

बालकनामा रिपोर्टर: अमृत

आज के आधुनिक दौर में इंटरनेट शिक्षा का एक महत्वपूर्ण साधन बन चुका है, लेकिन इसका गलत उपयोग बच्चों की पढ़ाई पर गंभीर असर डाल रहा है। मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और ऑनलाइन गेमिंग के बढ़ते इस्तेमाल ने बच्चों का ध्यान पढ़ाई से काफी हद तक भटका दिया है। पहले जहां बच्चे अपना अधिक समय किताबों और खेलकूद में बिताते थे, वहीं अब उनका अधिकतर समय मोबाइल स्क्रीन के सामने गुजर रहा है, जिससे उनकी पढ़ाई की आदतों में भी बदलाव देखने को मिल रहा है। वर्तमान समय में देखा जा रहा है कि बच्चे घंटों मोबाइल फोन पर व्यस्त रहते हैं। पढ़ाई के समय भी वे सोशल मीडिया, वीडियो देखने और गेम खेलने में उलझे रहते हैं, जिससे उनका ध्यान बार-बार भटकता है। कई बार वे होमवर्क और स्कूल के कार्यों को भी नजरअंदाज कर देते हैं, जिसका सीधा असर उनके शैक्षणिक प्रदर्शन पर पड़ता है और उनके अंक लगातार कम होते जा रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, बच्चों में इंटरनेट की बढ़ती लत एक गंभीर समस्या का रूप ले रही है। अत्यधिक उपयोग के कारण बच्चों में एकाग्रता की कमी, आंखों में थकान, सिरदर्द, नींद की समस्या और मानसिक तनाव जैसी दिक्कतें बढ़ रही हैं। इसके अलावा, बच्चों के व्यवहार में भी बदलाव देखा जा रहा है–वे चिड़चिड़े होते जा रहे हैं और परिवार के साथ समय बिताने से भी दूर होते जा रहे हैं। पढ़ाई में रुचि कम होना भी एक बड़ी चिंता

का विषय बन गया है। एक सर्वे के अनुसार, बड़ी संख्या में बच्चों में ध्यान की कमी और पढ़ाई के प्रति उदासीनता बढ़ रही है, जिसका मुख्य कारण मोबाइल और इंटरनेट का अत्यधिक उपयोग माना जा रहा है। खासकर छोटे बच्चों में यह समस्या तेजी से बढ़ती नजर आ रही है, क्योंकि वे कम उम्र में ही मोबाइल के आदी हो जाते हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यदि समय रहते इस समस्या पर ध्यान नहीं दिया गया, तो इसका असर बच्चों के भविष्य पर गंभीर रूप से पड़ सकता है। इसलिए आवश्यक है कि बच्चों को इंटरनेट का सही और संतुलित उपयोग सिखाया जाए। इंटरनेट का उपयोग पढ़ाई, जानकारी और नई चीजें सीखने के लिए होना चाहिए, न कि केवल मनोरंजन के लिए। इसके साथ ही अभिभावकों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें बच्चों के इंटरनेट उपयोग पर नजर रखनी चाहिए, उनके लिए समय सीमा निर्धारित करनी चाहिए और उन्हें खेलकूद, पुस्तक पढ़ने, चित्रकला, संगीत और अन्य रचनात्मक गतिविधियों की ओर प्रोत्साहित करना चाहिए। परिवार के साथ समय बिताना भी बच्चों के मानसिक और भावनात्मक विकास के लिए आवश्यक है। इंटरनेट बच्चों के लिए ज्ञान का एक बड़ा स्रोत है, लेकिन इसका गलत उपयोग उनके भविष्य के लिए खतरा बन सकता है। इसलिए जरूरी है कि अभिभावक और बच्चे मिलकर संतुलन बनाए रखें और तकनीक का सही दिशा में उपयोग करें, ताकि यह उनके विकास में सहायक बने, न कि बाधा।

जाम नाली से फैला गंदा पानी, रेलवे पटरी और गलियों में बढ़ी परेशानी

बालकनामा रिपोर्टर: प्रीति

पश्चिम दिल्ली के ठ-86 समुदाय में जल निकासी की समस्या लोगों के लिए बड़ी परेशानी बनती जा रही है। बालकनामा रिपोर्टर के दौरे के दौरान 13 वर्षीय प्रिया (परिवर्तित नाम) ने बताया कि इलाके की नाली का पानी सही तरीके से नहीं निकल पाता और अक्सर रेलवे पटरी पर फैल जाता है, जिससे वहां से गुजरने वाले लोगों के लिए फिसलने का खतरा बना रहता है।

प्रिया के अनुसार, आसपास के घरों से निकलने वाला पानी–जैसे नहाने, कपड़े धोने और बर्तन साफ करने का पानी–सीधे इसी नाली में जाता है। लेकिन नाली की नियमित सफाई नहीं होने और उसमें कचरा व पत्थर डाले जाने के कारण पानी का बहाव रुक जाता है। नतीजतन, पानी नाली में जमा होकर बाहर पटरी पर बहने लगता है और वहीं इकट्ठा हो जाता है। समुदाय में रहने वाली 12 वर्षीय गौरी (परिवर्तित नाम) ने भी इस समस्या की पुष्टि करते हुए बताया कि कई घर नाली के ऊपर या उसके बहुत पास बने होने के कारण लोगों को अधिक दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। कुछ लोग लापरवाही में नाली में कचरा और पत्थर डाल देते हैं, जिससे पानी आगे नहीं बढ़ पाता। इसके कारण न केवल रेलवे पटरी पर पानी जमा होता है, बल्कि कई बार यह पानी गलियों में भी फैल

जाता है, जिससे चलना मुश्किल हो जाता है। गौरी ने यह भी बताया कि एक दिन नाली की सफाई करने वाले कर्मचारियों ने लोगों से अपील की थी कि वे नाली में कचरा और पत्थर न डालें, क्योंकि इससे समस्या और गंभीर हो जाती है। हालांकि, इस अपील के बावजूद स्थिति में ज्यादा सुधार देखने को नहीं मिला है। इस समस्या का सबसे अधिक असर बच्चों और बुजुर्गों पर पड़ रहा है, जिन्हें आने-जाने में कठिनाई होती है। रेलवे पटरी पर जमा पानी के कारण फिसलन बढ़ जाती है, जिससे हादसे का खतरा बना रहता है। साथ ही गंदे पानी के कारण बीमारियों का डर भी लोगों को सताता है।

कपड़ों और बस्ती के आधार पर बच्चों के साथ भेदभाव, खेलने के अधिकार से वंचित

बालकनामा रिपोर्टर: अमृत

पश्चिमी दिल्ली में रहने वाले बच्चों के लिए अब खेल भी एक संघर्ष बनता जा रहा है। खेलना हर बच्चे का अधिकार है, लेकिन जब किसी बच्चे को उसके कपड़ों और रहने की जगह के आधार पर खेलने से रोका जाता है, तो यह उसके मन को गहराई से आहत करता है। ऐसा ही एक मामला बाल्मीकि कैंप में रहने वाले 13 वर्षीय रोहन (परिवर्तित नाम) के साथ सामने आया।

जानकारी के अनुसार, रोहन अपने दोस्तों के साथ पास के एक पार्क में खेलने गया था। वहां मौजूद एक गार्ड ने उसे सिर्फ इसलिए खेलने से मना कर दिया क्योंकि उसका पहनावा साधारण था और वह बस्ती से आता था। एक अन्य गार्ड ने भी उसे यह कहकर रोक दिया, 'यहां मत खेलो, जाकर किसी दूसरे पार्क में खेलो।' बिना किसी गलती के इस तरह रोके जाने से रोहन को गहरा आघात पहुंचा। बालकनामा रिपोर्टर अमृत से बातचीत के दौरान रोहन ने अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा, 'हम तो सिर्फ खेलने आए थे, हमने किसी का क्या बिगाड़ा था? हमें बहुत बुरा लगा और लगा कि हमारे साथ गलत हुआ है।'

रोहन के साथ आए उसके दोस्तों ने भी इस तरह के व्यवहार की पुष्टि की। उसके दोस्त सोनू (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'हम कई बार इस पार्क में खेलने आते हैं, लेकिन गार्ड हमें कपड़ों और बस्ती की वजह से रोक देते हैं। वे हमें देखते ही मना कर देते हैं, जबकि दूसरे बच्चों को कुछ नहीं कहते।'

वहीं अजय (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'हमें बहुत बुरा लगता है जब हमें इस तरह भगा दिया जाता है। हम भी बाकी बच्चों की तरह खेलना चाहते हैं, लेकिन हमें मौका ही नहीं दिया

जाता। ऐसा लगता है जैसे हमारे साथ भेदभाव किया जा रहा है।' बच्चों की बातों से स्पष्ट है कि यह घटना पहली बार नहीं हुई, बल्कि वे पहले भी कई बार ऐसे भेदभाव का सामना कर चुके हैं। इस तरह के व्यवहार से बच्चों में हीन भावना और दुख पैदा होता है, साथ ही उनके आत्मविश्वास पर भी नकारात्मक असर पड़ता है। खेल के मैदान, जो बच्चों के लिए खुशी और सीखने की जगह होने चाहिए, वहां इस प्रकार का भेदभाव बेहद चिंताजनक है। यह घटना समाज को यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या वास्तव में सभी बच्चों को समान अधिकार मिल रहे हैं। खेलना हर बच्चे का हक है, चाहे वह किसी भी परिवार या बस्ती से आता हो। समाज को इस तरह के भेदभाव को समझना और रोकना होगा, ताकि हर बच्चा बिना डर और भेदभाव के खेल सके और खुशहाल बचपन जी सके।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

सड़क से उठी आवाजः कामकाजी बच्चों ने सुनाई अपने संघर्ष और सपनों की कहानी

बालकनामा रिपोर्टरः अमृत

दिल्ली में चेतना एनजीओ द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम ने सड़क से जुड़े और कामकाजी बच्चों के जीवन की सच्चाई को बेहद भावुक और प्रभावशाली तरीके से समाज के सामने प्रस्तुत किया। यह आयोजन केवल एक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि बच्चों के लिए एक ऐसा मंच साबित हुआ, जहां उन्होंने पहली बार खुलकर अपनी आवाज उठाई और अपने संघर्षों को सबके सामने रखा। इस कार्यक्रम में बालकनामा रिपोर्टर अमृत स्वयं उपस्थित रहे और उन्होंने पूरे आयोजन को करीब से देखा।

कार्यक्रम की शुरूआत उत्साह और ऊर्जा के साथ हुई। धीरे-धीरे बड़ी संख्या में बच्चे, सामाजिक कार्यकर्ता और आम लोग वहां एकत्रित होने लगे। माहौल में एक ओर उत्सुकता थी, तो दूसरी ओर गहरी भावनात्मक अनुभूति भी महसूस हो रही थी। जैसे ही बच्चों को मंच मिला, उन्होंने बिना किसी डर के अपनी जिंदगी की सच्चाइयों को साझा करना शुरू कर दिया। कई बच्चों ने बताया कि उनका नाम पहले कहीं दर्ज नहीं था, जिसके कारण उन्हें स्कूल में दाखिला लेने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

एक बच्ची ने बताया कि वह पढ़ना चाहती थी, लेकिन पहचान न होने के कारण उसे बार-बार स्कूल से लौटा दिया जाता था। लंबे संघर्ष और सहयोग के बाद ही उसका नाम दर्ज हो पाया और आज वह स्कूल में पढ़ाई कर रही है। कुछ बच्चों ने यह भी बताया कि परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण उन्हें पढ़ाई छोड़कर काम करना पड़ा, लेकिन उनके मन में आगे बढ़ने और कुछ बनने की इच्छा कभी खत्म नहीं हुई। बच्चों की इन सच्ची बातों ने वहां मौजूद लोगों को भावुक कर दिया और कई लोगों की आंखें नम हो गईं। कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने अपनी समस्याओं के साथ-साथ अपने हुनर और आत्मविश्वास का भी शानदार प्रदर्शन किया। बच्चों ने नाटक प्रस्तुत किए, जिनमें उन्होंने अपने जीवन के संघर्ष, समाज की सच्चाई और अपने अधिकारों को प्रभावशाली ढंग से दर्शाया। इन प्रस्तुतियों ने दर्शकों को गहराई से प्रभावित किया और उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया। इसके अलावा, बच्चों ने रंगारंग नृत्य प्रस्तुतियां भी दीं, जिनमें उनका उत्साह, आत्मविश्वास और खुशी साफ दिखाई दे रही थी। ये प्रस्तुतियां केवल मनोरंजन नहीं थीं, बल्कि बच्चों की प्रतिभा और उनके मजबूत इरादों का प्रतीक भी थीं। हर प्रस्तुति के बाद दर्शकों ने जोरदार तालियों के साथ बच्चों का उत्साह बढ़ाया। कार्यक्रम में कई सामाजिक कार्यकर्ता और अन्य लोग भी शामिल हुए, जिन्होंने बच्चों की कहानियों को ध्यान से सुना और उनकी सराहना की। उन्होंने कहा कि

ऐसे कार्यक्रम समाज को जागरूक करने और बच्चों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस आयोजन की खास बात यह रही कि इसे इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे के अवसर पर आयोजित किया गया। इस दिन का उद्देश्य बच्चों के अधिकार, शिक्षा, सुरक्षा और बेहतर भविष्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। चेतना एनजीओ ने इस मौके पर बच्चों को ऐसा मंच दिया, जहां वे न केवल अपनी समस्याएं खुलकर रख सके, बल्कि अपने अधिकारों के प्रति भी जागरूक हुए। बच्चों ने अपनी आवाज उठाकर यह स्पष्ट संदेश दिया कि हर बच्चे को पहचान, शिक्षा और सम्मान मिलना चाहिए। यह कार्यक्रम उन बच्चों के लिए एक यादगार अनुभव बन गया, जो अब तक अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रहे थे। इस आयोजन ने यह साबित कर दिया कि यदि बच्चों को सही अवसर और सहयोग मिले, तो वे आत्मविश्वास के साथ अपनी कहानी दुनिया के सामने रख सकते हैं और अपने सपनों की ओर आगे बढ़ सकते हैं।

शकूर बस्ती में स्वच्छता संकटः एक शौचालय पर निर्भर पूरा समुदाय

बालकनामा रिपोर्टरः जहाना

पश्चिमी दिल्ली के शकूर बस्ती समुदाय में किए गए जमीनी सर्वेक्षण और छानबीन में सामने आया है कि यहां के लोग बुनियादी स्वच्छता सुविधाओं के अभाव में गंभीर परेशानियों का सामना कर रहे हैं। यह स्थिति न केवल दैनिक जीवन को प्रभावित कर रही है, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी बड़ा खतरा बनती जा रही है।जांच के दौरान पाया गया कि इतने बड़े समुदाय के लिए केवल एक ही सार्वजनिक शौचालय उपलब्ध है, जो आबादी के हिसाब से बेहद अपर्याप्त है। इसके कारण लोगों को रोजाना लंबी कतारों में खड़ा होना पड़ता है, जिससे उनका समय बर्बाद होता है और असुविधा बढ़ती है।स्थिति को और गंभीर बनाता है शौचालय का स्थान, जो रिहायशी क्षेत्र से काफी दूर है। खासकर रात के समय या आपात स्थिति में बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों के लिए वहां तक पहुंचना न केवल कठिन बल्कि असुरक्षित भी हो जाता है।शौचालय की साफ-सफाई की स्थिति भी चिंताजनक पाई गई। नियमित सफाई के अभाव में वहां गंदगी और तेज बदबू बनी रहती है, जिससे लोगों को इसका उपयोग करने में भी दिक्कत होती है। इससे हैजा, टाइफाइड जैसी बीमारियों के फैलने का खतरा भी बना रहता है।इन समस्याओं के कारण स्थानीय निवासियों में असंतोष बढ़ता जा रहा है। पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में कई लोग खुले में शौच करने को मजबूर हैं, जिससे आसपास का वातावरण प्रदूषित हो रहा है और स्वच्छता पर नकारात्मक असर पड़ रहा है। यह स्थिति सरकार के स्वच्छता अभियानों के उद्देश्यों के भी विपरीत है।समुदाय के लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि उनकी इस समस्या पर जल्द ध्यान दिया जाए। उनका कहना है कि यदि समुदाय के भीतर कम से कम 2 से 3 नए शौचालयों का निर्माण किया जाए और उनकी नियमित सफाई सुनिश्चित की जाए, तो उनकी परेशानियां काफी हद तक कम हो सकती हैं। इससे न केवल स्वच्छता और स्वास्थ्य में सुधार होगा, बल्कि लोगों की सुरक्षा भी सुनिश्चित हो सकेगी।

संसाधनों की कमी के बावजूद शिक्षा की मिसाल बने कमला नेहरू कैंप के बच्चे

बालकनामा रिपोर्टरः आसिफ

दिल्ली के कमला नेहरू कैंप की झुग्गी बस्ती में रहने वाले कुछ बच्चों ने अपनी पढ़ाई को मजबूत करने के लिए एक सराहनीय पहल शुरू की है। सीमित संसाधनों और कठिन परिस्थितियों के बावजूद ये बच्चे हार नहीं मान रहे हैं और अपने भविष्य को बेहतर बनाने के लिए स्वयं प्रयास कर रहे हैं।बस्ती का माहौल भले ही चुनौतीपूर्ण हो, लेकिन इन बच्चों के हौसले बहुत मजबूत हैं। वे शिक्षा के महत्व को समझते हुए लगातार आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। दिनभर घर के काम, छोटे-मोटे कामकाज और अन्य जिम्मेदारियों को निभाने के बाद ये बच्चे शाम के समय एक स्थान पर एकत्र होकर पढ़ाई करते हैं। यह दृश्य इस बात का उदाहरण है कि यदि सीखने की इच्छा हो तो कोई भी कठिनाई रास्ता नहीं रोक सकती।खुले माहौल या किसी एक कोने में बैठकर ये बच्चे मिलकर पढ़ाई करते हैं और एक-दूसरे को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। बस्ती के कुछ बड़े बच्चों ने छोटे बच्चों को पढ़ाना शुरू किया है। वे उन्हें होमवर्क करवाते हैं, कठिन सवालों को आसान भाषा में समझाते हैं और पढ़ाई में आने वाली समस्याओं को मिलकर हल करते हैं। इससे न केवल पढ़ाई का एक सकारात्मक माहौल बन रहा है, बल्कि बच्चों में सहयोग और एक-दूसरे की मदद करने की भावना भी विकसित हो रही है।धीरे-धीरे यह पहल एक सकारात्मक बदलाव की ओर बढ़ रही है और बच्चों का आत्मविश्वास भी पहले से अधिक मजबूत हो रहा है। बालकनामा रिपोर्टर आसिफ से बातचीत के दौरान 15 वर्षीय नेहा (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'हम सब रोज शाम को एक साथ बैठकर पढ़ाई करते हैं। अगर किसी को कोई सवाल समझ नहीं आता, तो हम एक-दूसरे की मदद करते हैं। साथ में पढ़ने से हमें अच्छा लगता है और पढ़ाई भी आसानी से समझ में आती है।वहीं 14 वर्षीय अमित (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'पहले हम अकेले पढ़ते थे, लेकिन अब साथ में पढ़ने से पढ़ाई आसान लगती है और मन भी ज्यादा लगता है। अब हम रोज पढ़ाई करने की कोशिश करते हैं और एक-दूसरे को भी याद दिलाते हैं।समुदाय के लोगों का कहना है कि बच्चों की यह पहल बेहद सराहनीय है। इससे न केवल इन बच्चों को लाभ हो रहा है, बल्कि बस्ती के अन्य बच्चों को भी शिक्षा के प्रति प्रेरणा मिल रही है। कई अभिभावक भी अब अपने बच्चों को इस समूह से जोड़ रहे हैं, जिससे क्षेत्र में पढ़ाई का माहौल और मजबूत हो रहा है। कुछ लोग बच्चों को कॉपी, किताबें और अन्य आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध कराने में मदद कर रहे हैं।यह पहल यह दर्शाती है कि यदि बच्चों को सही दिशा, सहयोग और प्रोत्साहन मिले तो वे कठिन परिस्थितियों में भी अपने सपनों को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। छोटे-छोटे प्रयास समय के साथ बड़े बदलाव का कारण बनते हैं, और यह पहल इसका एक सशक्त उदाहरण है। ऐसे प्रयास समाज के लिए भी प्रेरणा हैं कि मिलकर काम करने से हर कठिनाई को आसान बनाया जा सकता है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

सपनों को मिला मंचः आकाशवाणी में गूंजी सड़क एवं कामकाजी बच्चों की आवाज

बालकनामा रिपोर्टर - दामिनी
बातूनी रिपोर्टर - काजल

8 अप्रैल 2026 को सड़क एवं कामकाजी बच्चों को ऑल इंडिया रेडियो (आकाशवाणी) जाने का एक विशेष अवसर मिला। इस दौरान बच्चे बेहद उत्साहित और खुश नजर आए, क्योंकि यह उनके जीवन का पहला अनुभव था जब उन्हें इतनी प्रतिष्ठित जगह पर जाने और अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने का मौका मिला। कई बच्चों के लिए यह सपना पूरा होने जैसा था और वे पूरे समय पूरे उत्साह के साथ हर गतिविधि में भाग लेते रहे। आकाशवाणी पहुँचने पर बच्चों का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। बच्चों ने अपने हाथों से वेस्ट सामग्री से तैयार किया गया आकाशवाणी का एक सुंदर मोमेंटो भेंट किया और बुके देकर आभार व्यक्त किया। यह उपहार देखकर निदेशक डॉ. अर्चना सिन्हा भावुक और प्रसन्न हुईं और उन्होंने बच्चों की मेहनत, सोच और रचनात्मकता की सराहना की।इसके बाद बच्चों को आकाशवाणी के स्टूडियो, रिकॉर्डिंग रूम और रेडियो प्रसारण की पूरी प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी गई। माइक, मिक्सर और अन्य उपकरणों को देखकर बच्चों की उत्सुकता और भी बढ़ गई। जब प्रत्येक बच्चे के सामने माइक रखा गया, तो वे खुद को बहुत खास महसूस करने

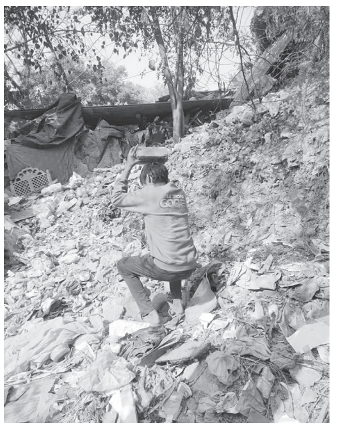

लगे। कई बच्चे पहली बार इतने बड़े स्टूडियो में आए थे, इसलिए उनके चेहरे पर खुशी और आत्मविश्वास साफ दिखाई दे रहा था।कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियां भी दीं। 13 वर्षीय मानवी (परिवर्तित नाम) ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों के जीवन की चुनौतियों, उनके समाधान और बाल अधिकारों पर एक सुंदर गीत प्रस्तुत किया। 14 वर्षीय सेजल (परिवर्तित नाम) ने हिंदी भाषा के महत्व पर एक प्रेरणादायक कविता सुनाई, जिसे सभी ने ध्यान से सुना। 15 वर्षीय अली (परिवर्तित नाम) ने हाव-भाव के साथ एक रोचक और प्रेरणादायक कहानी प्रस्तुत की। वहीं 13 वर्षीय जनक (परिवर्तित नाम) ने पारंपरिक नगाड़ा वादन प्रस्तुत किया। जब उससे पूछा गया कि उसने यह कला कहां सीखी, तो उसने बताया कि उसके पिता और दादा भी यही काम करते थे और उन्हें देखकर ही उसने यह कला सीखी।बच्चों की आत्मविश्वास से भरी प्रस्तुतियों को देखकर आकाशवाणी की टीम बहुत प्रभावित हुई। यह भ्रमण केवल एक दौरा नहीं था, बल्कि बच्चों के लिए जीवन का एक यादगार अनुभव बन गया, जिसने उन्हें अपनी आवाज और प्रतिभा को एक नया मंच दिया।इस प्रस्तुति का प्रसारण 12 अप्रैल 2026 को 'बालवाणी' कार्यक्रम में ऑल इंडिया रेडियो पिंक सिटी चैनल के माध्यम से किया गया, जिससे बच्चों को रेडियो पर अपनी पहचान बनने का गर्व महसूस हुआ। यह उनके लिए एक बड़ी उपलब्धि और अविस्मरणीय पल था।कार्यक्रम के बाद बच्चों ने अपने अनुभव भी साझा किए। सेजल ने कहा, 'पहली बार माइक पर बोलकर बहुत अच्छा लगा, हमें लगा कि हमारी बात भी लोग सुन सकते हैं।' वहीं अली ने बताया, 'आकाशवाणी देखकर लगा कि हमारे सपने भी पूरे हो सकते हैं'। यहां आकर हमें बहुत कुछ नया सीखने को मिला और हमारा आत्मविश्वास भी बढ़ा।'यह अवसर बच्चों के लिए नई ऊर्जा, आत्मविश्वास और आगे बढ़ने की प्रेरणा लेकर आया। यह भ्रमण उनके लिए सीखने, अपनी बात कहने और सम्मान पाने का एक अविस्मरणीय अनुभव बन गया, जिसे वे हमेशा याद रखेंगे।

घर के झगड़ों का बच्चों की पढ़ाई और मानसिक स्थिति पर गहरा असर

बालकनामा रिपोर्टर अमृत
बातूनी रिपोर्टर शिखा

जब बालकनामा के रिपोर्टर अमृत ने दिल्ली की एक बस्ती का दौरा किया, तो वहां रहने वाले 13 वर्षीय बालक रोहन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उसके पड़ोस में रहने वाला एक बच्चा अपने घर के लगातार होने वाले झगड़ों के कारण काफी परेशान है। रोहन के अनुसार, उस बच्चे के घर में माता-पिता और भाइयों के बीच अक्सर विवाद होते रहते हैं, जिसका सीधा असर उसके मानसिक स्वास्थ्य और पढ़ाई पर पड़ रहा है। ऐसे तनावपूर्ण माहौल में बच्चा खुद को असुरक्षित महसूस करता है और हमेशा डर के साये में रहता है। स्थानीय लोगों ने बताया कि झगड़ों के दौरान यह बच्चा घबरा जाता है और कई बार बीच-बचाव करने की कोशिश करता है, लेकिन उसे अक्सर डांट और मार भी झेलनी पड़ती है, जिससे उसका डर और बढ़ जाता है तथा वह अकेलापन महसूस करने लगता है। घर के इस तनावपूर्ण वातावरण का असर उसकी पढ़ाई पर भी साफ दिखाई दे रहा है, क्योंकि उसका ध्यान पढ़ाई में नहीं लग पाता, होमवर्क अधूरा रह जाता है और उसकी शैक्षणिक रुचि भी

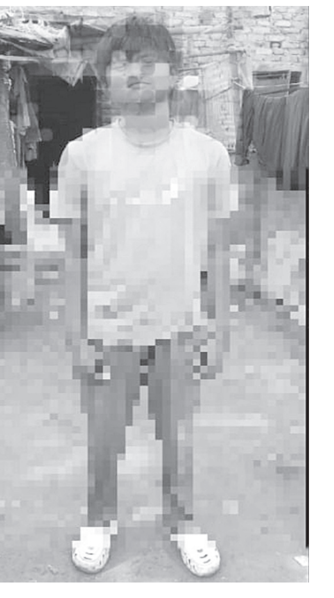

कम होती जा रही है। पड़ोसियों का कहना है कि बच्चों के सामने लगातार घरेलू विवाद होने से उनके मानसिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए घर में शांत, सुरक्षित और सहयोगपूर्ण वातावरण होना अत्यंत आवश्यक है, ताकि वे आत्मविश्वास के साथ पढ़ाई कर सकें और आगे बढ़ सकें।

गरीबी ने छीना बचपनः कमला नेहरू कैंप के बच्चे पढ़ाई छोड़कर फैक्ट्रियों में काम करने को मजबूर

बालकनामा रिपोर्टरः आसिफ

दिल्ली के कमला नेहरू कैंप में रहने वाले कई बच्चे गहरी आर्थिक तंगी के कारण अपनी पढ़ाई छोड़कर फैक्ट्रियों में काम करने को मजबूर हैं। परिवारों की कमजोर आर्थिक स्थिति के चलते शिक्षा का खर्च उठाना मुश्किल हो गया है, जिसके कारण कम उम्र में ही बच्चों पर काम का बोझ आ रहा है। इससे न केवल उनकी पढ़ाई बाधित हो रही है, बल्कि उनका बचपन भी प्रभावित हो रहा है। हाल ही में पुलिस को सूचना मिली कि इलाके में कई नाबालिग बच्चे फैक्ट्रियों में काम कर रहे हैं। इसके बाद की गई छापेमारी में कई बच्चों को वहां से रेस्क्यू किया गया, जिससे पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। लगभग सात दिनों बाद बच्चों को छोड़ दिया गया, लेकिन इस घटना ने बच्चों और उनके परिवारों पर गहरा असर छोड़ा है। बालकनामा रिपोर्टर आसिफ से बातचीत में 15 वर्षीय फिरदौस (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'हम बहुत गरीब हैं। मेरे पापा कमाते तो हैं, लेकिन घर का खर्च पूरा नहीं होता। पापा शराब भी पीते हैं, इसलिए मुझे भी काम करना पड़ता है ताकि घर चल सके।' उसकी बातों से साफ है कि मजबूरी में बच्चे बाल श्रम की ओर धकेले जा रहे हैं। इसके बाद रिपोर्टर ने फिरदौस को बाल श्रम निषेध कानून की जानकारी दी और समझाया कि नाबालिग बच्चों से फैक्ट्री में काम कराना कानूनन अपराध है और यह उनके स्वास्थ्य व भविष्य दोनों के लिए नुकसानदायक है। यह बात समझने के बाद फिरदौस ने महसूस किया कि उसकी उम्र पढ़ाई करने की है, काम करने की नहीं। वहीं फिरदौस की माँ ने चिंता जताते हुए कहा, 'मैं बहुत डर गई थी जब पुलिस उसे ले गई थी, लेकिन अगर वह काम नहीं करेगा तो घर कैसे चलेगा?' यह सवाल इस समुदाय के कई परिवारों की वास्तविक स्थिति को दर्शाता है। यह घटना एक बार फिर यह सोचने पर मजबूर करती है कि गरीबी के कारण बच्चों का बचपन और भविष्य दोनों खतरे में पड़ जाते हैं। ऐसे परिवारों को आर्थिक और सामाजिक सहायता की आवश्यकता है, ताकि बच्चे काम के बजाय शिक्षा की ओर बढ़ सकें और एक सुरक्षित भविष्य बना सकें।

जुए और सट्टे की चपेट में आते बच्चे, बर्बादी की ओर बढ़ता बचपन

बातूनी रिपोर्टरः अमृत

दिल्ली शहर की एक बस्ती में जुए और सट्टे का बढ़ता चलन अब बच्चों के भविष्य के लिए गंभीर चिंता का विषय बनता जा रहा है। जब बालकनामा के रिपोर्टर अमृत ने इलाके का दौरा किया, तो उन्होंने देखा कि कुछ स्थानों पर लोग खुलेआम ताश और सट्टा खेलते नजर आए। हैरानी की बात यह थी कि इन जगहों के आसपास कई बच्चे भी मौजूद थे और कुछ बच्चे वहीं खड़े होकर इन गतिविधियों को देख रहे थे। स्थानीय लोगों के अनुसार, जुआ खेलने वाले कुछ लोग बच्चों को छोटे-छोटे कामों के लिए पैसे दे देते हैं, जैसे पानी लाना, सामान देना या इधर-उधर दौड़ना। इसी लालच में कई बच्चे इन जगहों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। धीरे-धीरे यह आदत उनके व्यवहार और दिनचर्या को प्रभावित कर रही है और वे पढ़ाई से दूर होते जा रहे हैं।कुछ बच्चे इन स्थानों पर अधिक समय बिताने लगे हैं, जो उनके भविष्य के लिए हानिकारक साबित हो सकता है।इलाके के कुछ माता-पिता का कहना है कि बच्चों का समय पढ़ाई, खेलकूद और सकारात्मक गतिविधियों में लगना चाहिए, लेकिन जुए के अड्डों के कारण उनका ध्यान भटक रहा है। कई बार बच्चे स्कूल से लौटने के बाद सीधे घर जाने के बजाय इन जगहों के आसपास घूमते देखे जाते हैं, जिससे परिवारों की चिंता बढ़ गई है।सामाजिक कार्यकर्ताओं का मानना है कि यदि समय रहते इस समस्या पर ध्यान नहीं दिया गया, तो बच्चों का बचपन और उनका भविष्य दोनों प्रभावित हो सकते हैं। ऐसे माहौल में रहने से बच्चे गलत आदतों की ओर भी आकर्षित हो सकते हैं, जो उनके समग्र विकास के लिए हानिकारक है। इसलिए बच्चों को एक सुरक्षित और सकारात्मक वातावरण मिलना बेहद जरूरी है।स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि ऐसे जुए के अड्डों पर सख्त कार्रवाई की जाए और बच्चों के लिए सुरक्षित माहौल सुनिश्चित किया जाए। साथ ही, परिवार और समाज की भी जिम्मेदारी है कि वे बच्चों पर ध्यान दें, उन्हें सही दिशा दिखाएं और अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित करें। सामूहिक प्रयासों से ही बच्चों को गलत रास्तों से बचाकर उनका भविष्य सुरक्षित और उज्ज्वल बनाया जा सकता है।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए एचसीएल फाउंडेशन, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन और Mcarbon Tech Innovation Pvt. Ltd. का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अख़बार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूज़लेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471